भारतीय दर्शन एवं साहित्य के विकास में प्राकृत वाङ्मय का योगदान

The Contribution of Prakrit Literature for Development of Indian Philosophy & Literature

प्रधान सम्पादक

डॉ. प्रकाश पाण्डेय

सम्पादक

प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई

डॉ. धर्मेन्द्र जैन

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानितविश्वविद्यालय)

जयपुर परिसर, जयपुर

14. आचार्य गुणधर कृत कषायपाहुड का मनोवैज्ञानिक अध्ययन 113
वीरसागर जैन, दिल्ली
15. मुनिराज प्रभाचन्द्र (पूर्वनाम – सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य-प्रथम) की कान्तार-चर्या 117
राजाराम जैन, दिल्ली
16. आचार्य गुणधर के कसायपाहुडसुत्त का दार्शनिक चिन्तन 122
अनिल कुमार जैन, जयपुर
17. पंचास्तिकाय का दार्शनिक क्षेत्र में योगदान 130
मंजू जैन, जयपुर
18. Philosophical Significance of Siddhasena Divakara's Sammai-Suttam 140
Kokila H. Shah, Mumbai
19. Philosophical views depicted in Suyagadao (Sutakritanga Sutra) 149
Varsha Shah, Mumbai
20. प्राकृत काव्यों में निहित दार्शनिक तत्त्व 157
सत्यनारायण भारद्वाज, लाडनूँ
21. प्राकृत–हिन्दी जैन गीति काव्य परम्परा 163
पुष्पलता जैन, दिल्ली
22. प्राकृत भाषा का स्तोत्र साहित्य 173
ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, वैशाली
23. पाइय-साहिच्चम्मि पायच्छित्तस्स अवधारणा 182
पुलक गोयल, जयपुर
24. प्राकृत साहित्य में भारतीय दण्ड संहिता के बीज 190
सतेन्द्रकुमार जैन, दिल्ली
25. आचार्य कुन्दकुन्द के लिंगपाहुड की वर्तमान में उपयोगिता 207
कमल कुमार जैन, पूना
26. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में विवेचित चार्वाक दर्शन के सन्दर्भों की समीक्षा 212
सुमत कुमार जैन, जयपुर
27. गोम्मटसार (जीवकाण्ड) में जीवसमास की प्ररूपणा 218
राका जैन, लखनऊ
28. प्राकृतसाहित्ये ध्यानस्वरूपम् 227
प्रमोद जैन, जयपुर
29. नयचक्रस्य दार्शनिक-समीक्षा 232
वैद्यनाथ झा, जयपुर
30. प्रश्नव्याकरण में प्रतिपादित संवरद्वार का दार्शनिक चिन्तन 236
सत्यमकुमारी, जयपुर

प्राकृत काव्यों में निहित दार्शनिक तत्त्व

सत्यनारायण भारद्वाज

भारतीय संस्कृति अध्यात्मपरक संस्कृति रही है। यहाँ के साहित्यकारों ने भी अध्यात्म को परिपुष्ट करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य की सभी विधाओं में दार्शनिक तत्त्व उजागर हुआ है।

दर्शन शब्द का अर्थ साधारणतया 'दृष्टि' अर्थात् बाह्य चक्षु से लगाया जाता है। किन्तु सर्वसाधारण लोग जहां दृष्टि का अर्थ बाह्य चक्षु से लगाते हैं वहीं विद्वान् विचारक इसका अर्थ आन्तरिक चक्षु से लगाते हैं। स्पष्टतया जब कभी भी हम किसी समस्या के समाधान के लिए सोचना प्रारम्भ करते हैं, वहीं से दर्शन प्रारम्भ हो जाता है।

प्राकृत भाषा में काव्य प्रणयन, उसके प्रादुर्भाव काल से ही होता आ रहा है। यह भाषा जनभाषा थी। अत: इसका साहित्य जनता का साहित्य है। कवि वाक्पति राज ने प्राकृत भाषा का महत्त्व इन शब्दों में व्यक्त किया है –

णवमत्थदंसणं संनिवेस सिसिराओ बन्धरिद्धीओ।
अविरलमिणमो आभुवणबन्धमिह णवर पययम्मि।।

प्राकृत भाषा में रचित महाकाव्य जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं। चाहे सामाजिक पहलू हो या राजनैतिक, आर्थिक हो या आध्यात्मिक। अत: प्राकृत महाकाव्य में अनेक स्थानों पर दार्शनिक तत्वों का समावेश रचनाकारों ने किया है, जिसका एक प्रमुख कारण यह भी माना जा सकता है कि ये रचनाकार जीवन को आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करने में विश्वास रखने वाले थे।

प्राकृत भाषा में मुख्य रूप से चार महाकाव्य परिगणित होते हैं, उनमें से प्रथम महाकाव्य **समराइच्चकहा** में जैन दर्शन का प्रधान लक्ष्य आत्मा को सांसारिक मायाजाल से मुक्त कराकर, अनन्त सुख (मोक्ष) की प्राप्ति कराना है। इस ग्रन्थ में श्रमण और श्रमणाचार के अतिरिक्त कुछ दार्शनिक विचारों का भी विवेचन किया गया है, जिसके अन्तर्गत लोक-परलोक, जीव गति, कर्म गति आदि का विश्लेषण किया गया है। इनमें से कुछ तत्त्वों का वर्णन यहां प्रस्तुत है।

संसार गति – समराइच्चकहा में संसार गति को दारुण बताया गया है।[1] यहां इस संसार गति का हेतु